

मुख्य जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

बेहतरीन ग़ज़लों, पूर्वोत्तर राज्यों के नृत्य प्रदर्शनों और भावपूर्ण कवि सम्मेलन से लेकर अंतर्राष्ट्रीय फूड फ़ेस्टिवल और 'रन फ़ॉर यूनिटी' तक; जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने दिल्ली के सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक और शैक्षिक मेले- 'तालीमी मेला 2025' का किया आयोजन।

नई दिल्ली, 31 अक्टूबर, 2025

बेहतरीन ग़ज़ल गायकों और हिंदी कवियों की मनमोहक प्रस्तुतियों और भावपूर्ण रचनाओं ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के विशाल अंसारी ऑडिटोरियम लॉन में 8,000 से ज़्यादा छात्रों, संकाय सदस्यों और मेहमानों को मंत्रमुग्ध कर दिया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के 105वें स्थापना दिवस के छह दिवसीय भव्य समारोह के आज तीसरे दिन परिसर में उत्सव का माहौल बन गया।

दिन की शुरुआत देशभक्ति के जोश के साथ हुई जब विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय एकता में उनके अमूल्य योगदान को सम्मान देने के लिए अपने खेल परिसर में सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया। जामिया के कुलपति प्रोफेसर मजहर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रोफेसर महताब आलम रिज़वी के नेतृत्व में आयोजित 'रन फ़ॉर यूनिटी' में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इसके बाद प्रोफेसर जुबैर मीनाई ने 500 से अधिक छात्रों, संकाय सदस्यों और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों को 'एकता की शपथ' दिलाई, जिससे जामिया की एकता, शांति और राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि हुई।

तालीमी मेले का एक यादगार कार्यक्रम आध्यात्मिक रूप से समृद्ध 'महफिल-ए-किरात-ओ-नात ख्वानी और प्रोफेसर मोहम्मद मुजीब स्मृति व्याख्यान' था, जिसने उत्सव को एक गंभीर माहौल प्रदान किया। मौलाना मुफ़द्दल शाकिर और मौलाना शब्बीर हुसैन भोपालवाला, दोनों ही जामिया के कुलाधिपति (अमीर-ए-जामिया) माननीय सैयदना मुफ़द्दल सैफुद्दीन के प्रतिनिधि, और प्रख्यात शिक्षाविद् एवं मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय (MANUU) के पूर्व कुलपति प्रो. मोहम्मद असलम परवेज इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अपने संबोधनों में, मौलाना मुफ़द्दल शाकिर और मौलाना शब्बीर हुसैन भोपालवाला ने जामिया की ऐतिहासिक विरासत और शिक्षा एवं सामाजिक सुधार में इसके स्थायी योगदान पर प्रकाश डाला। मौलाना भोपालवाला ने अमीर-ए-जामिया का बधाई संदेश दिया और इस बात पर प्रकाश डाला कि जामिया की स्थापना त्याग, दृढ़ विश्वास और ईमानदारी पर हुई थी, ये ऐसे मूल्य हैं जो आज भी इसकी प्रगति का मार्गदर्शन करते हैं और मानवता की कुंजी हैं। अपने ज्ञानवर्धक व्याख्यान, "कुरान और ब्रह्मांड" में, प्रो. मोहम्मद असलम परवेज ने कहा, "कुरान केवल कथनी के लिए नहीं, बल्कि चिंतन और करनी के लिए है; सच्ची सफलता इसके संदेश को समझने और हमारे सामूहिक जीवन में लागू करने में निहित है।" एम.ए. अरबी कार्यक्रम के छात्र सयार शब्बीर वानी और मोहम्मद आदिल ने अतिथि वाचक बुरहानुद्दीन बद्री और हुजैफा बद्री के साथ मिलकर श्रद्धा और भक्ति से ओतप्रोत नात प्रस्तुत की, जिसने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

प्रतिदिन शाम 5:30 बजे आयोजित होने वाली सांस्कृतिक संध्याएँ स्थापना दिवस समारोह का एक प्रमुख आकर्षण बनी हुई हैं। 29 अक्टूबर को, पद्मश्री उस्ताद अहमद हुसैन और उस्ताद मोहम्मद हुसैन की

बहुप्रतीक्षित 'शाम-ए-गज़ल' ने अपनी भावपूर्ण धुनों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया, जब अंसारी ऑडिटोरियम का भव्य लॉनसुनहरी रोशनी से जगमगा उठा। अगली शाम 30 अक्टूबर को, 'अखिल भारतीय कवि सम्मेलन' में लक्ष्मी शंकर बाजपेयी, यश मालवीय, अमन अक्षर, राहुल शर्मा, दीक्षित दनकौरी, रंजीत चौहान, प्रीति त्रिपाठी और अभिषेक तिवारी जैसे प्रसिद्ध कवि एकत्रित हुए। मार्मिक भावनात्मक से लेकर हल्के-फुल्के हास्य और सामाजिक व्यंग्य तक की उनकी प्रस्तुतियों का हिंदी विभाग के प्रो. रहमान मुसव्विर ने खूबसूरती से संचालन किया।

कल, विश्वविद्यालय का एम्प्लीथिएटर शैक्षिक अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर भारत के जीवंत नृत्य प्रदर्शनों से जीवंत हो उठा। सफेद, लाल, नीले, काले और सुनहरे रंग के पारंपरिक परिधानों में सजे छात्रों ने क्षेत्र की समृद्ध विरासत का जश्र मनाया, जिसमें चाय बागानों से जुड़े जनजातियों और असम की संस्कृति, वस्त्रों और लोक विरासत पर ध्यान केंद्रित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भूपेन हजारिका की उत्कृष्ट कृतियों में से एक 'गंगा बहती हो क्यों' से हुई, जिसके बाद क्षेत्र के सबसे प्रिय गायकों में से एक, हाल ही में दिवंगत हुए जुबीन गर्ग को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई, उनकी कालातीत धुनों ने पुरानी यादों और गर्व दोनों को जगाया।

जेएमआई अपनी शानदार खान-पान संस्कृति के लिए जाना जाता है और उस परंपरा को बनाए रखते हुए, तालीमी मेले के दौरान, अंतर्राष्ट्रीय खाद्य महोत्सव ने उत्सव में लज़ीज़ स्वाद जोड़ा और परिसर को रंग, सुगंध और उत्साह से भर दिया। आयोजन स्थल पर लगी स्टॉलों में पारंपरिक भारतीय फास्ट फूड और मीठे व्यंजनों से लेकर अंतरराष्ट्रीय व्यंजन और ठंडी मिठाइयों तक सब कुछ उपलब्ध था। छात्र और आगंतुक एक स्टॉल से दूसरे स्टॉल पर जाकर स्वाद चखते, बातचीत करते और आनंद के पलों को संजोते रहे।

कार्यक्रम की सफलता पर विचार करते हुए, प्रो. आसिफ़ और प्रो. रिज़वी ने कहा, "विस्तारित तालीमी मेले ने सेमिनारों, व्याख्यानो, पैनल चर्चाओं और कार्यशालाओं, खासकर पुस्तक मेलों, प्रदर्शनियों, भोजन, संगीत और नृत्य के माध्यम से जामिया की बौद्धिक जीवंतता और सांस्कृतिक विविधता को खूबसूरती और सशक्त रूप से प्रदर्शित किया है, जिससे परिसर शैक्षिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के एक जीवंत उत्सव में बदल गया है।"

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी